[Devi *, Vol.5 (Iss.6): June, 2017]
ICV (Index Copernicus Value) 2015: 71.21

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
IF: 4.321 (CosmosImpactFactor), 2.532 (I2OR)
InfoBase Index IBI Factor 3.86

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Social

# श्री धर्मवीर भारती निबंधकार के रूप में

**प्रमिला देवी** *1
*1 प्राध्यापिका, कन्या महाविद्यालय, खरखौदा (सोनीपत)

**DOI:** https://doi.org/10.5281/zenodo.835375

**मुख्य शब्द** – डॉ. धर्मवीर भारती; हिन्दी साहित्य

***Cite This Article:*** प्रमिला देवी. (2017). "श्री धर्मवीर भारती निबंधकार के रूप में." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 5(6), 689-692. https://doi.org/10.5281/zenodo.835375.

## 1. भूमिका

प्रयोगवाद के प्रवर्त्तक अज्ञेय जी द्वारा संपादित 'दूसरा सप्तक' 1951 ई. के साथ ही डॉ. धर्मवीर भारती का हिन्दी साहित्य में आगमन हुआ । भारती जी उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार, कवि और 'धर्मयुग' के संपादक के रूप में जाने जाते हैं । इस बहुमुखी प्रतिभा के धनी भारती जी को एक प्रख्यात निबंधकार के रूप में भी जाना जाता है ।

धर्मवीर भारती की प्रशंसा करते हुए अज्ञेय लिखते हैं – ''प्रतिभाएँ और भी हैं, कृतित्व औरों का भी उल्लेखनीय है, पर उनसे धर्मवीर भारती में एक विशेषता है । वे केवल अच्छे, परिश्रमी, रोचक लेखक नहीं हैं, वे नयी पौध के सबसे मौलिक लेखक हैं ।''[1]

भारती के निबंधकार के रूप को स्पष्ट करने से पहले एक बात बता देनी चाहिए कि उनके निबंधों को निबंध की शिल्पगत व्याख्या के अनुकूल माना जाए अथवा नहीं, इस बारे में यदा–कदा प्रश्न उठते रहे हैं । उनको निबंधकार के रूप में उतनी ख्याति नहीं प्राप्त हुई, जितनी कवि के रूप में । अतः कहा जा सकता है कि निबंधकार डॉ. भारती पर अभी तक सम्यक् विवेचन होना शेष है । डॉ. वेदवती राठी मानती है कि, ''हिन्दी गद्य की ललित लेखन परम्परा में उनकी तीन गद्यकृतियॉं विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं । जिनमें 'पश्यन्ती', 'कहनी–अनकहनी' में दी गयी ललित निबंधनुमा गद्यरचनाएँ उनके आत्मकथात्मक प्रयोगों के सुन्दर निदर्शन कहीं जा सकती हैं । 'ठेले पर हिमालय' तीसरी रचना है, जिससे यात्रा–विवरण, डायरी, पत्र, शब्द–चित्र, संस्मरण, कैरीकेचर, व्यंग्य, रूपक, श्रद्धांजलि और आत्म व्यंग्य जैसे शीर्षकों के अंतर्गत जो गद्यरचनाएँ दी गयी हैं, वे अपने रूप में ललित गद्य के सुन्दर उदाहरण हैं ।''[2]

अतः यहॉं इन रचनाओं को 'ललित निबंधनुमा गद्य रचनाएँ' कहा गया है ।

उसी प्रकार डॉ. जयचंद्र राय का मत है – 'धर्मवीर भारती ने कहनी अनकहनी' और 'पश्यन्ती' में समय–समय पर प्रकाशित टिप्पणियॉं और लेख प्रस्तुत किए हैं, जो कभी–कभी ललित निबंध का कलेवर

धारण कर लेते हैं।''[3] फिर भी, अपनी समीक्षा में इन दोनों ने भारती को निबंधकार के रूप में ही स्थान दिया है । इन पंक्तियों के लेखक के मत से ऐसा होने के पीछे यह कारण होगा कि भारती जी हजारी प्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र और कुबेरनाथ की परंपरा के ललित निबंधकार नहीं हैं । उनके निबंधों की पदसंरचना, शैली, प्रतिपाद्य विषय आदि सभी पर नवलेखन का प्रभाव दिखायी देता है । डॉ. बच्चन सिंह तो स्पष्ट लिखते हैं, 'ठेले पर हिमालय', 'कहनी अनकहनी', 'पश्यन्ती' आदि उनके निबंधसंग्रह हैं ।''[4]

वास्तव में भारती कथात्मकता, प्रवाहपूर्णता आदि गुणों द्वारा निबंध लेखन के नये आयाम उद्घाटित करते हैं। वे वैचारिकता को लालित्य, हास्य, कथारस और घटनाओं के सुंदर वर्णनों द्वारा मनोहर रूप में व्यक्त करते हैं। निबंधकार के रूप में उनकी उपलब्धियॉ डॉ. बच्चन सिंह के शब्दों में देखें तो–''भारती के निबंधों पर पांडित्य का लदाव नहीं है । वे आडम्बरहीन भाषा में प्रकृति से गहन सान्निध्य स्थापित कर सकते हैं, दार्शनिक चिन्तन कर सकते हैं, और हल्के–फुल्के व्यंग्य–विनोद द्वारा हिपोक्रेसी का पर्दाफास करते हुए भी लिख सकते हैं ।''[5]

इनके अब तक प्रकाशित तीनों संग्रह 'पश्यन्ती', 'ठेले पर हिमालय' तथा 'कहनी–अनकहनी' का अपना–अपना महत्त्व है । 'पश्यन्ती' भारती के लेखकीय व्यक्तित्व और उनके रचना–विधान पर प्रकाश डालता है । 'ठेले पर हिमालय' उनको एक भावुक लेखक के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित करता है । 'कहनी–अनकहनी' में उनकी विविध वैचारिक स्थिति देखी जा सकती है।

धर्मवीर जी बड़ी लगन और सूझबूझ के व्यक्ति हैं । 'अनुक्रम' में निबंधों के शीर्षकों के साथ उनके प्रथम प्रकाशन का वर्ष भी दे देते हैं, ताकि समय तथा संदर्भ स्पष्ट रहें । जैसे 'पश्यन्ती' के निबंध सन् 1959 से सन् 1967 समय में प्रकाशित हुए हैं । लेखक के जीवन में यह समय विशेष महत्त्व रखता है, क्योंकि यह अवधि 'अंधायुग' तथा 'कनुप्रिया' जैसी रचनाऍ प्रकाशित होने के बहुत निकट है । अतएव उस समय की भारती की मनः स्थिति और रचना–प्रक्रिया के विविध पड़ाव 'पश्यन्ती' में सहज ही मिल जायेंगे । इसीलिए सत्रह निबंधों के इस संग्रह को डॉ. हुकुमचन्द राजपाल ने 'भारती के रचना संसार की पिटारी' कहा है ।[6] यहॉ हम सुगठित अध्ययन के लिए तीनों निबंध संग्रहों में से केवल 'पश्यन्ती' के कुछ निबंधों की चर्चा करेंगे।

भारती ने आलोच्य संग्रह को कथ्य की दृष्टि से इन सात खण्डों में विभाजित किया है –

आत्मकथ्य, व्यक्तित्व और कृतित्व, सर्वथा निजी, पश्यन्तीः इतिहास सर्वेक्षण, युगबोध, चिकनी सतहें बहते आन्दोलन ।

हिन्दी के नवोदित साहित्यकारों में श्री धर्मवीर भारती का नाम अति आदर के साथ लिया जाता है । उन्होंनें खुद कहा है – ''मैं लिखकर लिखकर सीखता चल रहा हूॅ और सीख सीखकर लिखता चल रहा हूॅ ।[7] उनके नयेपन का इससे अधिक क्या प्रमाण चाहिए ? 'पश्यन्ती' का पहला ही निबंध 'नवलेखनःमाध्यम मैं' उनके नवलेखन का परिचय देता है । वे आधुनिकता की चर्चा करते हुए भी परम्परा के प्रति सजग रहे हैं । कुछ कवियों की कविताओं को उद्धृत करते हुए वे आज के लेखक के साथ महाभारत के संजय की तुलना करते हैं ।

''आज संजय (लेखक) को सिर्फ दिशाओं की दूरी नहीं पार करनी पड़ती, वरन् काल के अजस्र प्रवाह में पैठकर कभी उसे देखना पड़ता है जो आज बीज रूप में है और कल आ सकता है, कभी उसे पीछे लौटना पड़ता है जहॉ वह सब था और नहीं है और न होते हुए भी, अपनी जगह बदस्तूर कायम है । आज का

संजय (लेखक) बहुत बड़ी उलझन में है । उसका काम भी दोहरा, तिहरा और चौहरा हो गया है ।[8] उसके भाग्य में नहीं है कि वह तटस्थ रह सकें । सब की मुक्ति उसकी मुक्ति है । उसकी कोई वैयक्तिक मुक्ति नहीं है ।

दूसरा निबंध 'एक घृणाः अनेक आयाम' भारती ने अत्यंत रोचक और सजीव रूप में व्यक्त किया है । तीन अलग–अलग अभिनेता गोपालदास, मानवेन्द्र चिटणीस और सत्यदेव दुबे 'अन्धायुग' के अश्वत्थामा का अभिनय अपने अपने ढंग से लेखक के सामने करते हैं । भारती को स्वीकार करना पड़ता है कि ये तीनों ही अश्वत्थामा पृथक हैं । निष्कर्षरूप में वे लिखते हैं –''नाटक एक सहकारी कला है और अभिनेता भी नाटक की मूल परिधी के अन्दर रहकर कितनी मौलिकता व्याख्याओं में ला सकता है । यह इस दौरान मेरे समक्ष स्पष्ट होता गया ।''[9]

'जलौधमग्ना सचराचरा धरा', 'मध्यवर्ग का सैलाव और बूढ़ा मछेरा' के अन्तर्गत भारती एक सहज समीक्षक के रूप में हमारे सामने उभरते हैं ।प्रथम में 'बाणभट्ट की आत्मकथा' के मूलमंत्र ''किसी से न डरना, गुरू से भी नहीं, मंत्र से भी नहीं, लोक से भी नहीं, वेद से भी नहीं ।''10 के आलोक में उपन्यास तथा द्विवेदी जी के व्यक्तित्व को लेकर अपने विचार मौलिक ढंग से व्यक्त किए हैं, जबकि दूसरे में अमृतलाल नागर के उपन्यास 'अमृत और विष' की आलोचना की है ।

'वह एक कहानी और उसके अनेक परिशिष्ट' में लेखक मोपासॉ की कहानी 'धागे का टुकड़ा', के माध्यम से उन्हें याद आयी अनेक कहानियों का उल्लेख करते हैं । जमीन पर से 'धागे का टुकड़ा' उठाने वाले सीधे सादे किसान पर यह आरोप लगाया जाता है कि उसने बटुआ उठा लिया है और वह अपने को निर्दोष साबित करने के लिए छटपटाता है । मरने के जरा पहले बेहोशी में भी वह रटता है – ''बटुआ नहीं धागे का टुकड़ा था, मेयर साहब! यकीन कीजिए मेयर साहब! यह रहा वह धागे का टुकड़ा ।[11]

भारती का भावुक कवि हृदय 'शुक्र तारे वाली एक शाम' मे प्रकट हुआ है । शुक्र तारे वाली शाम को खुद का भटकना और रातभर अपने ऑगन में शुक्र तारे का महकना उन्हें प्यारा लगता है ।

'एक खत' निबंध में निबंधकार डायरी शैली में कुछ टिप्पणियॉ देकर अपने अन्दर उठने वाली शंकाओं का यथासंभव समाधान खोजने का प्रयास करता है । 'रत्नाकर शांति का सान्ध्य–चिंतन' निबंध में तांत्रिक युग का परिचय देकर गुरू नारोपा के कारण रत्नाकर शांति को ज्ञान का प्रकाश प्राप्त होने की बात कही गयी है । 'भारतीय साहित्य जगत् में हिन्दी लेखक' नामक रचना में भारती आज की समस्या को उठाते हैं । उन्होंनें बताया है कि समसामयिक लेखक, हिन्दी प्रेमियों, हिन्दी अध्यापकों और सरकार के पूर्वग्रहों का बुरी तरह शिकार हैं ।

'हिन्दी नाट्य लेखनः कुछ समस्याऍ' में डॉ. भारती मराठी के वयोवृद्ध नाटककार मामा वरेरकर के शब्दों में कहते हैं – ''भाई, जब तक हिन्दी नाटक खेले नहीं तब तक अच्छे नाटक लिखे कैसे जायेंगे और खेलने के लिए कॉलेज युनिवर्सिटी के छोकरों का अधकचरा रंगमंच या बड़े–बड़े शहरों के चन्द पढ़े लिखें का शौकिया रंगमंच कब तक काम देगा ? हिन्दी का एक बड़ा सुव्यवस्थित, आर्थिक दृष्टि से पुख्त रंगमंच होना चाहिए जो शहर–शहर गॉव–गॉव मेले–ठेलों में जा सके और उस रंगमंच से नाट्य लेखक का सीधा सम्बंध जुड़े तभी ठीक नाटक रचना सम्भव है ।[12]

भारती व्यंग्य करते हैं कि आजकल साहित्यिक नाट्य–लेखन के नाम पर ऐसी पुस्तकों के अम्बार लगने लगे हैं जो नाट्य विधा में लिखी हुई सिफारिश युक्त पाठ्य–पुस्तक मात्र होती है ।

अंत में वे आशा जगाते हैं कि आज जब नई कविता ने भाषा को मुक्त कर दिया है, तो आज का मंच–विधान खुद ब खुद भाषा के अनुकूल हो जाएगा । समानधर्मा निर्देशक और अभिनेता के सुझाव आज के नाटककार के लिए अत्यंत लाभदायक सिद्‌ध हो सकते हैं ।

## सन्दर्भ

[1] सूरज का सातवॉं घोड़ा, भूमिका, धर्मवीर भारती, पृ. 17
[2] हिन्दी ललित निबंधः परंपरा एवं प्रयोग, डॉ. वेदवती राठी, पृ. 134
[3] हिन्दी वाऽमयः बीसवी शती, सं. डॉ. नगेन्द्र, पृ. 344
[4] हिन्दी साहित्य का इतिहास सं. डॉ. नगेन्द्र, पृ. 699
[5] वही
[6] साहित्य के विविध आयाम, धर्मवीर भारती, पृ. 154
[7] सूरज का सातवॉं घोड़ा, निवेदन, धर्मवीर भारती, पृ. 10
[8] पश्यन्ती धर्मवीर भारती, पृ. 6
[9] वही, पृ. 16
[10] हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली, खण्ड–एक, पृ. 81
[11] पश्यन्ती, धर्मवीर भारती, पृ. 40
[12] वही, पृ. 109

*Corresponding author.
*E-mail address:* permila10478 @gmail.com